भूमिका

गंगा की गोद, हिमालय की छाया, परम पूज्य गुरूदेव एवं सप्तऋषियों की तमस्थली में स्थित गायत्री तीर्थ शांतिकुंज जहाँ 1926 से अखण्ड दीप प्रज्वलित है एवं प्रतिदिन यज्ञ होता है। ऐसे दिव्य वातावरण में आप लोग संस्कार कराने आये है, यह बड़े ही सौभाग्य की बात है जहाँ परम पुज्य गुरूदेव एवं परम वन्दनीया माता जी के सुक्ष्म संस्कार विद्यमान है।

अवलौकिक दिव्य वातावरण में आपका संस्कार प्रारम्भ करने से पूर्व हमें यह समझना होगा कि संस्कार है क्या ? संस्कार एक आध्यात्मिक उपचार है जिससे मनुष्य श्रेष्ठ व संस्कारवान बनता हुआ चला जाता है। संस्कार वह संजीवनी विद्या है, जिसके माध्यम से व्यक्ति को अनगढ़ से सुगढ़, नर से नारायण, मानव से महामानव बनाया जाता है। जिस प्रकार कही पर पत्थर पड़ा रहता है, वह पैरों से रौद जाता है, तो उसका कोई मूल्य नही होती, अगर उसी पत्थर किसी मूर्तिकार के हाथ लग जाता है, तो वह कटाई-छटाई करके सुन्दर मूर्ति बनाकर किसी मन्दिर या देवालय में स्थापित कर देता है, तो वह मूल्यवान बन जाता है। वह उतना ही निखरता हुआ चला जाता है। कहनें का तातपर्य है कि संस्कार के माध्यम से समान्य मनुष्य को भी श्रेष्ठ व समुन्नत बनाया जा सकता है। अनगढ़ से सुगड़ में परिष्कृत करने की प्रक्रिया को संस्कार कहा जाता है।

भारतीय धर्मानुसार संस्कार सोलह (16) प्रकार के है जिसे षोडस संस्कार कहते हैं। माता के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु तक की अवधि में प्रत्येक भारतीय को सोलह (16) बार संस्कारित कर रासयन बनाया जाता है। प्राचीन काल में प्रत्येक भारतीय जीता जागता देवता के रूप में होता था। परम पुज्य गुरूदेव समय काल परिस्थिति को देखते हुए संस्कार की संख्या 16 से हटाकर 10 कर दिये है तथा उसमें 3 संस्कार जोड़ दिये है,1.जन्म दिवस संस्कार 2.विवाह दिवस संस्कार 3. शिखा स्थापन संस्कार है। ये दो संस्कार ऐसे है जो व्यक्ति के जीवन में हर वर्ष मनाने का अवसर मिलता है।

संस्कार के नाम

1. पुंसवन संस्कार 2. नामकरण संस्कार 3. अन्नप्राशन संस्कार 4. मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार 5. शिखा स्थापन संस्कार 6. विद्यारम्भ संस्कार 7. यज्ञापवीत संस्कार 8. वानप्रस्थ (प्रव्रज्या) संस्कार 9. जन्मदिवसोत्सव संस्कार 10. विवाह दिवसोत्सव संस्कार

पुंसवन संस्कार

गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए भावी माता का पुंसन संस्कार किया जाता है। बालक को संस्कारवान् बनाने के लिए सर्वप्रथम माता पिता का भी संस्कारवान् होना अति आवश्यक है। पुंसवन दो शब्द से मिलकर बना है पुं+सवन पु का अर्थ है-जीव और सवन का अर्थ है-धोना या परिस्कार करना। जीव को संस्कारित करना ही पुंसवन कहलाता है। मनुष्य जन्म चौरासी लाख योनियों में भटक ने के पश्चात् प्राप्त होता है, इसमें अन्य योनियों के संस्कार जीव में समाहित रहते हैं। अतः संस्कार के माध्यम से कुसंस्कारों को दूर कर सुसंस्कारों की स्थापना की जाती है ।कहा गया है-

शोधन करते जो कलुषों को, संस्कार कहलाते हैं,
इनसे जुड़कर मानव, सहज देव बन जाते हैं।

पुंसवन संस्कार– भावी माता का तीन माह पश्चात् कराया जाता है, विलम्ब से भी किया जाये तो दोष नहीं। तीसरे माह से गर्भ में आकार तथा शारीरिक मानसिक विकास होना प्रारम्भ हो जाता है। जिसके साथ ही साथ माता की आदतों, विचारों गुण कर्म का प्रभाव भी शिशु के ऊपर पड़ता हुआ चला जाता है।

संत सुकरात कहते हैं– शिशु की पढ़ाई माँ के गर्भ से प्रारम्भ होती है। माता के शरीर से शरीर एवं मन से मन और स्वभाव से स्वभाव बनता है। जिस प्रकार अच्छी फसल के लिए अच्छी भूमि और अच्छी बीज की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शिशु को श्रेष्ठ बनाने के लिए माता पिता के शरीर, मन और स्वभाव श्रेष्ठ

होना बहुत ही जरुरी है। बालक गीली मिट्टी के समान है। हम उसे जैसा बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं। जैसे अभिमन्यु, को चक्रव्युह भेदन की दीक्षा अपनी माता के गर्भ से ही प्राप्त हुआ था। माँ मदालशा बालक के जन्म लेते ही कानों में कहाँ कहती थी।

शुद्धोसि बुद्धोसि निरंजनोसि,
संसार माया परिवर्जितोसि।

हे पुत्र तुम निर्मल हो केवल विचार हो, पाप रहित हो यह संसार तो माया और परिवर्तनशील है मोह में न पड़े अपने आपको जाने। इस तरह वह जैसा चाहती थी वैसा बना देती थी इसलिए कहा गया है ***माता निर्माता*** भवती संतान कोई भी उत्पन्न कर सकता है, पशु भी संतान उत्पन्न करते है। लेकिन वह सिर्फ जननी होती है। माता वह होती है जो निर्माण करती है।

जैसे- परम वन्दनीया माता जी ने हम सबका, सुभद्र ने अभिमन्नु का, सीता ने लव कुश का और सुजाता ने अष्टवक्र का निर्माण किया इसी तरह अगर हमें सुसंस्कारी बालक चाहिए तो माता-पिता का सुसंकारी होना अति आवश्यक है। ***यदि माता में है अज्ञान, तो बालक कैसे बने महान।*** यदि माता-पिता अपने जीवन में नियमित उपासना, साधना, अराधना का क्रम बनायें तो अवश्य ही संतान श्रेष्ठ, सद्गुणी होगी।

आइये यहाँ से पुंसवन संस्कार प्रारम्भ करते है-इसमें पहला क्रम आता है औषधि अवघ्राण का इसमें तीन चीजों का मिश्रण है-

1. वट 2. पीपल 3. गिलोय

1. वट– विशालता का प्रतीक है। धीरे-धीरे बढ़ना धैर्य का सूचक है और अपने आप को हर दृष्टि से मजबूत बनाता है। आंधी तूफान में भी अडिग खड़े रहता है उस पर अनेक पक्षी घोंसला बनाकर रहते हैं। अनेक राहगीर विश्राम करते हैं। और अन्य वृक्षों के बजाय इसकी आयु अधिक होती है। आपका बालक भी वट की तरह धैर्यवान, दीर्घजीवी, परोपकारी दृढ निश्चयी हो, इसी लिए औषधि अवघ्राण में वट का प्रयोग किया जाता है।

2. पीपल– पीपल देवयोनी का वृक्ष माना जाता है। सभी देवताओं का इसमें वास होता है। अन्य वृक्ष 12 घन्टे हमें आक्सीजन देते है लेकिन पीपल और तुलसी एक ऐसा वृक्ष है जो हमें 24 घन्टे आक्सीजन देता है। पीपल के समान आपका बालक देवतुल्य और परमार्थी बनें।

3. गिलोय– गिलोय एक बेल है। इसकी प्रवृत्ति ऊपर चढ़ने की होती है। यह एक रोगाणु नाशक भी है। जिस प्रकार बेल वृक्ष का सहारा पाकर हमेशा ऊपर की ओर चढ़ती है, उसी प्रकार शिशु भी अच्छे वातावरण का साथ पाकर निरन्तर आगे बढ़ता रहे, उन्नति करता रहे।

क्रिया–भाव–भावी माता दोनों हाथों में औषधि की कटोरी ले लें। यहाँ से सूत्र बोले जा रहे हैं। आप सभी दुहराते चलें।

1. ॐ दिव्यचेतनां, स्वात्मीयां करोमि
(हम दिव्य चेतना को आत्मसात् कर रहे हैं।)

2. ॐ भूयो भूयो विधास्यामि।
(यह क्रम आगे भी बनायें रखेंगे।)

अब भावी माता औषधि की कटोरी अपनी नासिका के पास ले जायें और गहरी श्वांस के माध्यम से मंत्र के साथ सूंघे। भावना करें हमारी श्वास के माध्यम से इस औषधि के दिव्य गुण शिशु तक पहुँच रहे हैं। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र–ॐ विश्वानि देवसवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥

गर्भ पूजन–गर्भ कौतुक नहीं है। एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। गर्भ के माध्यम से जीव प्रकट होना चाहता है। वह ईश्वर का एक अंश है उसे ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर उसका भव्य स्वागत होना चाहिए। गर्भ पूज्य है। इसलिए घर का वातावरण मंदिर के जैसा बनायें । उपासना, साधना और आराधना का क्रम अपनायें।

उपासना– अर्थात् ईश्वर के समीप बैठना और उनके गुणों को अपने अंदर धारण करना। यदि बालक को संस्कारवान बनाना है तो कम से कम 15 मिनट नियमित रूप से गायत्री महामंत्र का जप करें।

साधना– अपने आपको साधना, इन्द्रियों को वश में रखना, दोष-दुर्गणों को निकालना और नियमित सत् साहित्य का पठन-पाठन करें एवं मनन -चिन्तन का क्रम अपने जीवन में अपनायें यही जीवन की सच्ची साधना है।

अराधना– अपने प्रतिदिन का 1 घन्टा समय समाज सेवा

के कार्यों में लगायें। प्रतिदिन आप अंशदान के रूप में एक मुट्ठी अन्न या एक रूपया जरूर समाजरूपी भगवान के लिए समर्पित करें।

क्रियाभाव– घर के परिवारीजन एवं पति हाथ में अक्षत पुष्प लेकर यह सूत्र दुहरायें। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

सूत्र– ॐ सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये।
(नवागन्तुको को सुसंस्कृत और समुन्नत बनायेंगे।)

अब भावी माता के हाथ में अक्षत पुष्प दे दें। भावी माता अक्षत-पुष्प को गायत्री महामंत्र बोलते हुए अपने गर्भ से स्पर्श कराकर खाली तस्तरी में समर्पित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्।

आश्वास्तना– गर्भ से प्रकट होने वाले जीव को अपेक्षा होती है कि उसे विकास के लिए अच्छा वातावरण मिले। जिस सत्ता ने गर्भ प्रदान किया है वह भी उस उत्तरदायित्व को पूरा होते देखना चाहती है। इसलिए आने वाली जीवात्मा व परमसत्ता दोनों को आश्वस्त किया जाना चाहिए। जीवात्मा परमात्मा का एक रूप है इसलिए घर का वातावरण मन्दिर जैसा होना चाहिए।

पहला आश्वासन– भावी माता देती है। वह अपने कर्त्तव्य पर ध्यान देगी। हमेशा प्रसन्न रहरें, ईष्या, द्वेष, क्रोध आदि से दूर रहेंगी। बड़ों का सम्मान करें और छोटे को स्नेह दें। अपना आहार शुद्ध-सात्विक पौष्टिक व संस्काररयुक्त रखें।

दूसरा आश्वासन– भावी माता के पति एवं घर के परिजन

देगें कि वह भावी माता को स्वस्थ्य और प्रसन्न रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करेंगे। तथा उसके खान पान में रहन-सहन पर विशेष रूप से ध्यान देंगे। घर-परिवार का वातावरण अच्छा बनाये रखने का प्रयास करेंगे।

क्रिया पक्ष– पति भावी माता के कंधे पर अपना दाहिना हाथ रखें और सभी परिजन आश्वासन के भाव से अपना हाथ ऊपर उठायें। यहाँ से सूत्र बोले जा रहें हैं आप सभी दुहराते चलें।

सूत्र– 1. ॐ स्वस्थां प्रसन्नां कर्तु यतिष्ये
(भावी माता को स्वस्थ प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्न करेंगे।)

2. ॐ मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि।
(परिवार में कलह और मनोमालिन्य न उभरने देंगे।)

3. ॐ स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि।
(अपना आचरण-व्यहार अनुकरणीय बनायेंगे।)

अब प्रतिनिधि बहिनें सभी भावी माता के ऊपर मंत्र के साथ अक्षत पुष्प की वर्षा करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र– ॐ स्वस्ति॥ ॐ स्वस्ति॥ ॐ स्वस्ति॥

चारु प्रदान– खीर एक सुसंस्कारित अन्न है। आप सभी जानते हैं कि जब राजा दशरथ के यहाँ कोई पुत्र नहीं था तब राजा दशरथ ने महर्षि श्रृंगि से पुत्रेष्ठी यज्ञ कराया था। यज्ञावशिष्ठ के रूप में प्राप्त खीर अपनी तीनों रानियों को खिलाया था। तो उनके यहाँ राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुहन जैसे बालक अवतरित हुए थे इस खीर में तीन बीजों का मिश्रण

है-अक्षत, दूध और चीनी। *अक्षत -अटूट* निष्ठ का प्रतीक है। बालक अटूट निष्ठावान हो। *दूध-निर्मलता* और सात्विकता का प्रतीक है। बालक निर्मल ह्रदय और सात्विक हो। *चीनी-मधुरता* का प्रतीक है बालक मधुर भाषी बने

अन्न प्रभु का प्रसाद है। इसे बिना भोग लगाये न खायें। इसके लिए नित्य बलि वैश्य प्रक्रिया अपनायें। इसे घर की गृहणियाँ बड़ी सहजता से कर सकती है। इष्ट देव को भोग लगाने के भाव से सफाई एवं पवित्र भाव से भोजन पकायें। एक साफ तश्तरी में रोटी या चावल लेकर घी, गुड़ या चीनी मिलाकर गैस में जाली रख लें अथवा चूल्हे से अंगार खीच लें। पाँच बार गायत्री महामंत्र के साथ आहुतियाँ समर्पित करें। आहुतियों के पश्चात अग्निदेव के चारों तरफ जल का घेरा लगायें तथा उससे बचा हुआ प्रसाद भोजन में मिला दें। आपका भोजन प्रसाद बन जायेगा। इस प्रसाद को खाने वालों की मनोभूमि श्रेष्ठ होने लगेगी और आहुतियों से जो धुंआँ निकलेगा उससे घर का वातावरण शुद्ध होगा। भावी माता बलिवैश्य नियमित करें जिससे गर्भस्थ शिशु पर श्रेष्ठ संस्कार आयेंगे।

क्रिया पक्ष- भावी माता खीर की कटोरी अपने दोनों हाथ में पकड़े मंत्र के बाद मस्तक पर लगायें बाद में खीर भावी माता स्वयं अकेले ही ग्रहण करें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र- ॐ पयः पृथिव्यां पयऔषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वती : प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

संकल्प ⇒

संकल्प शक्ति की उपलब्धि, कभी न अधूरी रहती है।
चाहे कितना दूर लक्ष्य हो, सहज सफलता मिलती है॥

किसी भी कार्य की पूर्णता के लिए संकल्प की आवश्यकता होती है। पवित्र भाव से कोई शुभ संकल्प लेता है तो निश्चित रूप से वह पूर्ण होता है। दैवी शक्तियाँ सहयोग करती हैं आने वाले शिशु का भी हित इसी में कि हम उसके लिए अपना विचार-व्यहार तथा घर-परिवार का वातावरण, खान-पान ठीक बनाए रखने का संकल्प लें। छोटे-छोटे कार्यों को मनोयोग से पूरा किया जाय तो संकल्प बल में वृद्धि होती है। आप सभी यहाँ से संकल्प लेकर जायें कि भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित बनाने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे, घर का वातावरण शुद्ध बनायेंगे। ईष्या, द्वेष, क्रोध आदि से दूर रहेंगे। एक अच्छाई ग्रहण करेंगे और एक बुराई छोड़ेंगे। नियिमित बलिवैश्य करेंगे। अपने जीवन में उपासन साधना का क्रम बनायेंगे, सत्संगति अपनायेंगे कहा भी गया है

सत्संगति की महिमा न्यारी, इसके लाभ अनेक।
जो भी इससे जुड़ जाता, वह तो बन जाता है नेक॥

आपके संकल्प पूरे हों हम पूज्य गुरूदेव एवं वन्दनीया माता जी से प्रार्थना करते हैं। आइए इन्हीं भावों के साथ हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर संकल्प सूत्र दुहराएँ सूत्र यहाँ से बोले जा रहे है।

संकल्प-अद्य.....गोत्रोत्पनः.....नामाहं पुंसवन संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्टयर्थं देवदक्षिणा अन्तर्गते-दिव्यचेतनां स्वात्मीयां करिष्ये, सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये, स्वस्थां प्रसन्नां

कर्तुं यतिष्ये, मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि, स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

नामकरण संस्कार

भूमिका–आइये यहाँ से नामकरण संस्कार प्रारम्भ किया जा रहा है। नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के बाद का पहला संस्कार है। यह जन्म के बाद दसवें या बारहवें दिन कराया जाता है, विलंब से करवाया जाये तो भी कोई परेशानी नहीं होगी। इस दिन शिशु का समाज से तथा समाज का परिचय शिशु से कराने

के लिए यज्ञीय वातावरण में संपन्न कराया जाता है, उसे ही नामकरण संस्कार कहते है।

संस्कार का उद्देश्य व्यक्ति का जीवन लक्ष्य निर्धारित करना। अतः उसके मन में पिछले जन्म के संस्कारों की छाप रहती है वह अनेक योनियों में भ्रमण करता हुआ मनुष्य शरीर में आया है, स्वाभाविक है पिछले कुसंस्कार साथ आते हैं। इन कुसंस्कारों का निवारण तथा सुसंस्कारों की स्थापना का प्रयास इस संस्कार के माध्यम से किया जाता है क्योंकि व्यक्ति के नाम का जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। कहा जाता है, ***यथा नाम तथा गुण*** अर्थात जैसा नाम होगा वैसा ही उसके गुणों का विकास होता है। यदि हम किसी का नाम टिंकु, पिंकु, रिंकु आदि नाम रख देते हैं लेकिन जब शिशु अपने नाम का महत्व समझने लगता है तो उसे आत्म-ग्लानी होती है उसी के अनुरूप उसमें गुण विकसित होते हैं। इसलिए हमेशा श्रेष्ठ नाम रखना चाहिए। जैसे-विवेकानन्द नाम रखने से विवेकानन्द की का व्यक्तित्व हमारे सामने आता है। अतः हमें महापुरुष, देवी-देवता, तथा प्रकृति के नाम पर रखना चाहिए।

प्राचीन काल में हमारे समाज में बहुत रूढ़िया थी बालक को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। घर में लड़का होता था तो, ढोल बजते थे। उसका नामकरण धुमधाम से मनाया जाता था उसे कुल का दीपक माना जाता था। लेकिन यदि बालिका जन्म होती थी तो बड़े दुखी मन से लड़की का नामकरण किया जाता था और कई प्रांतों में जन्म लेते ही मार डालते थे। कहीं-कहीं

आज भी लड़का-लड़की में भेद-भाव देखने को मिलता है। पर आज लड़कियाँ तो लड़को से कहीं अधिक आगे हैं। यदि शिक्षा का क्षेत्र हो या खेल-कूद का क्षेत्र हो लड़कों से लड़कियों की योग्यता अधिक होती जा रही है। हर क्षेत्र में प्रगति ही प्रगति है।

हमारे शास्त्रों में एक कहानी है-एक अजामिल नाम का दुष्ट दुराचारी था। उसने अपने पुत्र का नाम नारायण रखा था। और जब उसका अंतिम समय आया तो वह अपने पुत्र का नाम नारायण-नारायण लेकर पुकारने लगा। उसकी पुकार सुनकर भगवान स्वयं आये। उसे दर्शन दिये अजामिल को सद्गति प्राप्त हुई।

कहने का तात्पर्य है कि नारायण का नाम लेने से भगवान की छवि का अहसास होता है। और जो छवि या भाव अंत समय में रहता है, वह आगे की गति का कारण बनता है। इसलिए माता-पिता को ध्यान देना चाहिए। शिशु का ऐसा नाम रखें|जिससे उसे हमेशा गौरव अनुभव होता रहे।

आइये इसी भाव के साथ नामकरण संस्कार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते है इसमें पहला क्रम आता है-

1.मेखला बंधन- मेखला शीशु के कमर में बाँधी जाती है। मेखला कई लड़ो से सूत बना हुआ है। उसे करधनी या कौधंनी भी कहते है। यह कटि बध रहने का प्रतीक है। जैसे आपने देखा होगा फौजी, जवान तथा पुलिस के सिपाही कमर में बेल्ट बाँध कर अपने कार्य करने के लिए तत्पर हो जाता है और अपनी ड्यूटी पुरा करता है। उसी प्रकार हमारे शिशु भी श्रमशील व

कर्त्तव्यनिष्ठ बने रहे। आलसी, प्रमादी व्यक्ति अपनी प्रतिभा एवं क्षमता को यूँ ही बर्बाद करते रहते हैं इसलिए बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता चले उसे जीवन में चुस्ती-स्फूर्ति बनाने का प्रयत्न करते रहेंगे। छोटे-छोटे कार्य के माध्यम से जागरूक बनायेंगे।

निर्देश- इसी भाव के साथ माता पिता हाथ में कलावा ले लें। सुत्र यहाँ से बोला जा रहा है उसे दोहरायें।

सूत्र-ॐ स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि ।
(शिशु में स्फूर्ति और तत्परता बढ़ायेंगे)।

क्रिया पक्ष- अब मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है। मंत्र के साथ शिशु के कमर में कलावा बाँधे।

मंत्र- ॐ गणानां त्वा गणपति छ हवा महे, प्रियाणां त्वा प्रियापति छ हमामहे, निधीनां त्वा निधिपति छ वहा महे, वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।

2. मधुप्राशन- मधु अर्थात शहद। मधु प्राशन का अर्थ है शहद चटाना। शहद मधुरता का प्रतीक है। बालक की वाणी में भी मधुरता का समावेश हो, इसलिए उसको शहद चटाया जाता है। सज्जनता की पहचान व्यक्ति की वाणी से ही होती है। जिस प्रकार कोयल की प्रशंसा और कौएँ की निन्दा की जाती है। दोनों का रंग एक जैसा होने पर भी वाणी संबधी अंतर के कारण की जाती है। उसी प्रकार वाणी के द्वारा ही हम मित्र को भी शत्रु और शत्रु को मित्र बना सकते है। इसलिए व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी वाणी में मिठास लाये हमारा शिशु भी मधुर भाषी बने,

इस भाव से

निर्देश- माता या पिता चम्मच में शहद लेकर सूत्र दुहराएँ। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

सूत्र- ॐ शिष्टतां शालीनतां विर्धयिष्यामि।
(शिशु में शिष्टताा-शालिनता की वृद्धि करेंगे)

क्रिया- अब मंत्र बोलते हुए शिशु को शहद चटायें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ मंगलं भगवान् विष्णु:, मंगलं गरूडध्वज:।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरि: ॥

3. *सूर्य नमस्कार:-* बच्चे को सूर्य देवता का दर्शन कराया जाता है। जिससे सूर्य देवता के गुण हमारे शिशु में भी आये। वह सूर्य के समान ओजस्वि, तेजस्वि बने। प्रखर और प्रकाशवान बने गति शीलता आये जीवन में श्रेष्ठ उद्देश्यों को धारण करें। सूर्य अकेले न चलकर अनेक ग्रहों को साथ में लेकर चलता हे। शिशु में भी समुहिकता का विकास हो इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए घर में देव मंदिर की स्थपना, उपासना, साधना स्वाध्याय सविता देवता का ध्यान गायत्री मंत्र का जप और सूर्य अर्ध्यदान के क्रम को अपनाना चाहिए जप करते समय बच्चे को गोदी में ले कर बैठें। और शिशु का भी कुछ बड़ा होने पर गायत्री मंत्र सिखाना चाहिए इससे शिशु जरुर तेजस्वि बनेगा।

क्रिया- पिता शिशु को लेकर सूत्र दुहहाएँ। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है। आप सभी दोहराएँ-

सूत्र-तेजस्वितां वर्धयिष्यामि।
(शिशु की तेजस्विता में वृद्धि करेंगे।)

पक्ष- अब गायत्री मंत्र बोलते हुए बच्चे का मुख पूर्व दिशा की ओर करके सूर्य दर्शन कराएँ। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

ॐ भूर्भव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।

4. *भूमि पूजन स्पर्श-* भूमि हमारी माता है। भूमि को केवल मिट्टी ही न माने। उसे देव भूमि जन्म भूमि, मातृ भूमि, भारत मात मानकर उसके प्रति सदैव अपनी श्रद्धा का भाव हमें रखना चाहिए जैसे शिशु को अपनी माँ के प्रति होता है। धरती माता की श्रमशीलता प्रसिद्ध है वह हम सबका भार उठाती है। सबसे एक समान व्यवहार करती है। हम उसके ऊपर कितनी गंदगी करें पर वह कभी नाराज नही होती है उदारता पुर्वक सब कुछ सहन करती है। हम पृथ्वी माता को एक दाना देते है। लेकिन वह हमें कई गुना करके देती है। पृथ्वी माता के समान ही हमारा बालक धैर्यवान, श्रमशील, समाजशील बने ऐसा भाव करते हुए-

निर्देश- माता पिता हाथ में अक्षत-पुष्प लें सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है उसे दोहराएँ। ***सूत्र-ॐ सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठां विधास्यामि।***

सूत्र- (शिशु को सहन शील और कर्तव्यनिष्ठ बनाएगें।)

क्रिया पक्ष- अब अक्षत-पुष्प पृथ्वी पर स्पर्श कराये।

मंत्र-ॐ मही द्यौ: पृथ्वीचनऽ, इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभि: ॥ ॐ पृथ्वीव्यै नम:।

5. नाम घोषणा– यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मनुष्य को जिस तरह के नाम से पुकारा जाता है। उसे उसी प्रकारकी अनुभूति होता है। यदि किसी को कुड़ेमल, धुरेमल, घसिटा आदि नामों से पुकारा जायेगा तो उसके मन में हिन भावना पैदा होती है। नाम सार्थक बनाने की कई हलकी अभिलाषाएँ जगती रहती है। पुकारने वाले भी किसी नाम के अनुरूप उसके व्यक्तित्व की ~~झलकियाँ~~ भारी कल्पना करते है। अतः नाम रखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नाम प्रेरक या सुन्दर हो जिससे नाम सार्थक हो, प्रेरणा प्रद हो।

निर्देश– अब हम यहाँ से शिशु का नाम बोल रहे है। आप सब लोग तीन बार *चिरंजीवी हो* बोलेगें। दुसरे बार *धर्मशील हो* तीसरे बार *प्रगतीशील हो*

6. परस्पर परिवर्तन लोक दर्शन– माता अपने रक्त माँस से शिशु को पोषण करती है। और बालक भी माता के समीप अधिक रहता है माँ के क्रिया क्लापों एवं भावनाओं से प्रेरणा भी अधिक ग्रहण करता है। लेकिन अकेली माँ बच्चे का सम्पूर्ण विकास करने में समर्थ नही हो सकती।

जैसे– आहार, चिकित्सा, शिक्षा एवं संस्कार आदि का बहुत कुछ उत्तर दायित्व पिता एवं परिवार के अन्य लोगों पर भी समान रूप से होना चाहिए। खेती की तरह बालकों के निर्माण में घर के सब लोगों का योगदान बच्चे को मिलना अति आवश्यक है।

निर्देश– सभी उपस्थित जन शिशु को स्नेह देने और अनुशासन में रखने का भाव रखते हुए सूत्र दुहराएँ सूत्र यहाँ से बोला जा

रहा है।

सूत्र–ॐ उपलालनं करिष्यामि– अनुशिष्टं विधास्यामि।
(शिशु को दुलार देगें-अनुशासन में रखेंगे।)

क्रिया पक्ष– अब गायत्री मंत्र बोलते हुए माँ बच्चे को पिता की गोद में, पिता घर के अन्य परिजनों की गोद में दें। और पुनः माता की गोद में वापस दे दें। मंत्र यहाँ से से बोला जा रहा है। *मंत्र– ॐ भूर्भव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।*

7. बाल प्रबोधन– बाल प्रबोधन में प्रतिनिधि बहन शिशु के कान में मंत्र फुंकती है क्योकि इस समय शिशु पुर्व जन्म की याद संजोए रहता है और हमारी भावनाआों को समझता है जो प्रेरणा उसे दी जाती है वह उसे ग्रहण करता है इस समय उसे याद दिलाई जाती है कि तुम ईश्वर के अंश हो इसलिए करूणा, ममता, दया जिसे मानवीय गुणों को धारण करना, ऋषि अनुशासन का पालन करना इस का विशेष प्रभाव शिशु पर पड़ता है।

जैसे–रानी मदालसा अपने पुत्रों के जन्म के बाद उनके कान में कहा करती थी।

शुद्धोसी बुद्धोसी, निरंजनोसी इस मंत्र के माध्यम से उनके बालक संत स्तर के महान बनें, हमारे शिशु में भी इन्हीं गुणों का विकास हो,

निर्देश:– इसी भाव के साथ प्रतिनिधि बहन शिशु के कान में मंत्र फूँके।

मंत्र-1. भो तात!त्वं ईश्वरांशोऽसि (हे तात!तुम ईश्वर के अंश हो।)

2. मनुष्यता तव महती विशिष्टता। (तुम्हारी सबसे बड़ी विशेषता ~~मनुष्य है।~~) मनुष्यता है।)

3. ऋष्यनुशासनं पालये:। (जीवन भर ऋषि-अनुशासन का पालन करना)।

8. आशीर्वचन:- अब सभी परिजन एवं प्रति निधि बहिनें हाथ में अक्षत पुष्प लें। मंत्र के साथ बच्चे को आशीर्वाद दें। उज्जवल भविष्य की कामना करें। परम पू.गुरुदेव, वन्दनीया माता जी की आशीर्वाद बच्चे पर सदैव बरसता रहें।इसी भाव से उन पर पुष्प वर्षा करें। मंत्र- मंगलं भगवान्- - -

9. संकल्प एवं पूर्णाहुतिः- संकल्प का कोई विकल्प नही होता। अगर हमारी संकल्प दृढ़ हो तो कोई भी कार्य आसान होता है।

जैसेः- हम कोई अनुष्ठान करते हैं तो उसे पुरा कर के ही छोड़ते हैं वैसे ही आज छोटे-छोटे सूत्र के माध्यम से जो कुछ भी सुने है, सीखे हैं, उसे अपने जीवन में उतारेंगे, इसे यही तक ही सीमित नही रखेंगे।साथ ही अपने अन्दर के बुराई को परम पू. गुरुदेव के चरणों में दक्षिणा के रुप में अर्पित करें।आइये इसी भाव के साथ हाथ में अक्षत पुष्प ले लें।यहाँ से संकल्प सूत्र बोला जा रहा हैं उसे दोहरायें।

संकल्प

अद्य ....गोत्रोत्पन्नः ....नामाहं नामकरण संस्कार

सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा अन्तर्गते-स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि, शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि, तेजस्वितां वर्धयिष्यामि, सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठं विधास्यामि, उपलालनं करिष्यामि, अनुशिष्ट विधास्यामि इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

अन्नप्राशन संस्कार

आइये अब अन्नप्राशन संस्कार प्रारम्भ करते है। बच्चा छै महिने तक माँ के दूध पर निर्भर रहता है। छै माह के पश्चात् दाँत निकलना प्रारम्भ हो जाता है।जो इस बात का सूचक है कि शिशु अब कुछ ठोस आहार को पचाने की क्षमता रखता है अतः प्रथम बार अन्न जो शिशु को दिया जा रहा है। उसे अन्नप्राशन संस्कार के माध्यम से संस्कारित करके ही दिया जाता है।

अन्न का हमारे शरीर से ही नही मन का भी गहरा संम्बध होता है।कहा गया है। '*जैसा खाये अन्न वैसा बने मन*'

अर्थात जैसे हम अन्न ग्रहण करते हैं उसके अनुरुप हमारा मन बनता हुआ चला जाता है। यदि हम शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं तो हमारे मन में सात्विक विचार आते है।

लेकिन यदि हम अनीति पूर्वक कमाया हुआ तामसिक भोजन ग्रहन करते हैं तो हमारे मन में वैसे ही कुसंस्कार आते हैं।

कहानी-एक बार महात्मा आनन्द स्वामी के पुत्र जो क्रांतिकारी थे उन्हें जेल जाना पड़ा। रात को सोते समय उन्हें तरह-तरह के स्वप्न आते थे। स्वप्न में कभी वह अपने माँ को मार रहे होते, कभी उनके बाल पकड़कर घसीट रहे होते। जबकि वे अपनी माँ को बहुत प्यार करते थे। वे बहुत परेशान रहने लगे। उनके पिताजी जब उनसे मिलने जेल में आये तो उन्होंने अपनी माँ के बारे में पूछा। पिताजी ने कहा तुम्हारी माँ ठीक है, तुम्हें बहुत याद करती है। उन्होंने अपने पिताजी को स्वप्न के बारे में बताया। पिताजी ने पूछताछ किया तो पता चला उस जेल में जो रसोईया भोजन बनाता था। वह मातृ हत्या की सजा में जेल में बंद था और जब वह भोजन बनाता था तो उसके मन में वैसे ही विचार आते रहते थे। जिसका प्रभाव भोजन पर भी पड़ा। जिससे भोजन ग्रहण करने वाले भी प्रभावित हुए। → कहने का तात्पर्य है।

इसलिए भोजन पकाते समय हमें मानसिक रुप से गायत्री मंत्र बोलते हुए ही भोजन बनाना चाहिए। भोजन किस तरह पकाया गया है। किस मनोभूमि के व्यक्ति ने भोजन बनाया है। और कैसे वातावरण में भोजन बना है इसका पूरा-पूरा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। भोजन के माध्यम से ~~हमारे~~

अन्न का जीवन में अत्यधिक महत्व है जो हमारे स्वास्थ्य और सात्विक मन का निर्माण करता है। उस अन्न को आज बच्चा अपने जीवन में पहली बार ग्रहण करने जा रहा है। उसे हम

संस्कार के माध्यम से प्रारम्भ करते है।

इसमें पहला आता है पात्र पूजन का- पात्र पात्रता का प्रतीक होता है। हमे ईश्वरीय अनुदान वरदान प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपनी पात्रता का विकास करना होगा। जिसकी जितनी पात्रता होगी उसी के अनुरूप उसे ईश्वरीय अनुदान-वरदान मिलता हुआ चला जायेगा।

कहने का तात्पर्य है कि हमें अपनी पात्रता विकसित करने के लिए अपने जीवन में उपासना-साधना और आराधना का क्रम बनाना चाहिए। तभी हमारी पात्रता विकसित होगी और दैवी अनुग्रह प्राप्त होगा। जिस प्रकार छिद्र युक्त पात्र में पानी नही भरा जा सकता। ठीक उसी प्रकार संस्कार युक्त आहार (खीर) कुसंस्कार युक्त पात्र में नही जा सकता है। इसलिए संस्कारित अन्न को रखने से पहले पात्र को भी संस्कारित किया जाता है ~~उसकी~~ पात्र का पूजन किया जाता है।

क्रिया पक्ष- माता हाथ में रोली लेकर सुत्र दुहराएँ सुत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

सूत्र:- ॐ सुपात्रताम् प्रदास्यामि। (शिशु में सुपात्रता का विकास करेंगे)।

क्रिया- मंत्र के साथ अभिभावक पात्र पर रोली से स्वास्तिक बनाएँ साथ ही अक्षत पुष्प को चढ़ायें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धाश्रवा:, स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।

स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥

अगला क्रम है। अन्न संस्कार:- बच्चे को पेय पदार्थ से अन्न पर लाने के लिए खीर दी जाती है। यह पेय और खाद् के बीच अवस्था है, अर्थात हमें बच्चे की आयु, उसकी पाचन क्षमता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही उसके आहार का चयन करना चाहिए।

खीर सुपाच्य, सन्तुलित आहार है। ~~इसमें~~

मधु:- मधुरता का प्रतीक है। बच्चे का आचरण व्यवहार और वाणी में मधुरता आए।

घी:- स्नेह का प्रतीक है। बच्चा सभी का स्नेह दुलार पाता हुआ आगे बढ़े।

तुलसी:- विकार नाशक है। बच्चों के सभी रोग दूर हों और उसमें आध्यात्मिक भावों का विकास हो।

गंगाजल:- पवित्रता का प्रतीक है बच्चा भी पवित्र और निर्मल ह्रदय वाला बनें।

ये सभी वस्तुएँ अन्न को संस्कारित करने के लिए मिलाई जाती हैं।

क्रिया:- माता-पिता खीर के पात्र को हाथ में लेकर सूत्र दुहरायें। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

सूत्र:- ॐ कुसंस्कारा: दूरी भूयासु: ।
(अन्न के पूर्व कुसंस्कारों का निवावरण करते हैं)

क्रिया पक्ष:- प्रतिनिधि बहनें खीर के पात्र में जल के छीटें लगायें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र :- ॐ मंगलम् भगवान् विष्णु:, मंगलम् गरूडध्वज: । मंगलम् पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरि: ॥

क्रिया:- पुनः प्रतिनिधि बहनें खीर के पात्र में ~~जल~~ के ~~छीटे लगाएँ~~ तुलसी पत्ते डालें। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है सभी दुहराएँ-

सूत्र:- ॐ सुसंस्कारा: स्थिरी भूयासु: ।
(इसमें सात्विक, सुसंस्कारों की स्थापना करते हैं।)

इसके पश्चात् क्रम आता है-

अन्नप्राशन का:- दिव्य वातावरण की ऊर्जा से प्रभावित अन्न को अब बच्चों को खिलायेंगे। जो दिव्य ऊर्जा से अमृत तुल्य बन गया है। इससे बच्चों के गुण, कर्म, स्वभाव चिन्तन, चरित्र तथा व्यवहार पर प्रभाव पड़ेगा तथा मन में देवत्व के संस्कार जागृत होंगे। हमें प्रतिदिन यज्ञ देव को भोग लगाकर भोजन ग्रहण करना चाहिए।

भावपूर्वक भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण किया गया अन्न वास्तव में संस्कारित हो जाता है। भावना में भगवान् का वास होता है। जिससे विष भी अमृत में बदल जाता है। इसका उदाहरण मीरा है मीरा को विष का प्याला दिया गया था,

मीरा ने उसे भगवान् श्री कृष्ण को अर्पण करके प्रसाद स्वरूप बना लिया और विष अमृत में बदल गया।

उसी प्रकार हमें भी अपने घर में अन्न को संस्कारित करके खाना और खिलाना चाहिए। इसके लिए घर में प्रतिदिन बलिवैश्य की परम्परा डालनी चाहिए। अर्थाता जब आप भोजन बना लेते है तो रोटी या चावल में गुड़ और घी मिलाकर चुल्हे या गैस पर कटोरी रखें और गायत्री मंत्र बोलते हुए आहुति समर्पित करें। बचे हुए अन्न को पूरे भोजन में मिला दें, जिससे भोजन प्रसाद स्वरुप हो जायेगा और जो भी इस भोजन को ग्रहण करेगा। उसमें निश्चित ही श्रेष्ठ विचारों का बीजारोपण होगा। ईमानदारी, नीतिपूर्वक कमाया हुआ धन समाज के लिए अंशदान के रूप में बच्चों के हाथों से निकाले इससे बच्चों में देने की या मिल बाँटकर खाने की प्रवृत्ति जागृत होगी। घर-परिवार में नियमित रूप से उपासना, साधना और आराधना का क्रम भी बनायें।

क्रिया:- माता-पिता खीर चम्मच में ले लें। यहाँ से गायत्री मंत्र बोला जा रहा है। साथ में गायत्री मंत्र बोलते हुए बच्चे को खीर चटायें।

ॐ भूर्भव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।

संकल्प अन्नप्राशन संस्कार

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर संकल्प लें। संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता। संकल्प में हजार हाथियों का बल होता है ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। प्रजापति ब्रह्मा ने संकल्प किया तो सृष्टि की उत्पत्ती हुई। परम पूज्य गुरूदेव ने युग निर्माण का

संकल्प लिया है। हम सब उनके मानस पुत्र हैं। उस संकल्प को पूरा करने हेतु हमें सच्चा दूत की भूमिका निभानी ही होगी। आज आप लोग भी इस पवित्र वातावरण में संकल्प लें कि शिशु को सात्विक, पौष्टिक आहार देंगे। ईमानदारी की कमाई से प्राप्त अन्न का सेवन करेंगे। और बलि वैश्य के रूप में भगवान् को भोग लगाकर भोजन को नित्य प्रसाद मानकर ग्रहण करेंगे। संकल्प सूत्र यहाँ से बोलला जा रहाँ है सभी दुहराएँ।

संकल्प

अद्य..... गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहं अन्नप्राशन संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देवदक्षिणा-अन्तर्गते सुपात्रतां प्रदास्यामि, कुसंस्कारान्दूरी करिष्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

विद्यारम्भ संस्कार

विद्यारम्भ संस्कार जब बच्चा तीन साल का हो जाता है और स्कूल जाना प्रारम्भ करता है, तब उसका विद्यारम्भ कराया जाता है। विद्यारम्भ संस्कार में माता-पिता यह संकल्प लेते है कि शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करुँगा उसे शिक्षार्थि नही विद्यार्थी बनाऊँगा बालक में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का समावेश करुँगा शिक्षा और विद्या में अंतर क्या हैं शिक्षा हमें किताबी ज्ञान देती हैं, भौतिक उन्नति करने का माध्यम बनाती हैं जिसके माध्यम से हम आर्थिक उपार्जन कर सकते हैं शिक्षा से सुख सुविधा तो मिल जाती हैं सफलता भी प्राप्त हो जाती हैं। लेकिन आज हम बच्चों को कितनी सुख

सुविधायें देते हैं । अच्छे से अच्छे स्कूलों कालेजों में शिक्षा देते है लेकिन क्या कारण है इतनी शिक्षा देने के बाद भी हमारे बच्चों में व्यौहारिक ज्ञान नही हैं। इसका मात्र एक ही कारण हैं विद्या का अभाव।

आज हम बच्चों को पढ़ा लिखा कार डाक्टर, इन्जिनियर

बना देते है। लेकिन उसे इंसान नही बना पाते इंसान में इंसानियत मानव में मानवता, मनुष्य में मनुष्यता का विकास करने के लिए विद्या का होना उतना ही आवश्यक है जितना की शिक्षा। जिसके बीना हर उपलब्धिया, व्यर्थ हैं। विद्या एक प्रकार की साधना हैं जो अतः क्षेत्र का प्रचड पुरुषार्थ हैं। शिक्षा विज्ञान हैं तो विद्या ज्ञान हैं, शिक्षा सावित्री हैं तो विद्या गायत्री हैं। एक दूसरे के बिना बच्चे का जीवन अधुरा हैं। जैसे

कहानी :- ईश्वर चद्र विद्यासागर जब छोटे थे तब पिता का देहावसान (मृत्यु) हो जाने के कारण आर्थिक अभाव में रह रहें थे उनकी माता बड़ी दुखी होती कि बच्चे का पालन पोषण ठीक तरह से नही कर पा रहे थे। बच्चा अपनी माँ की वेदना को समझकर एक बार उनसे बोला माँ मै बड़ा होकर बहुत बड़ा आदमी बनुँगा ~~बहुत~~ बहुत बड़ा अधिकारी बनुँगा। और आपको बहुत सूख पहुँचाऊँगा माँ बोली बेटा तुम बड़े आमदी तो बनना पर महान भी बनना। वह कैसे मा, बोली बेटा तुम्हारे एक माँ नही हजारों माँ बहनों की स्थिति सुधारना हैं। क्योकि उस समय महिलाओं की स्थिति अच्छी नही थी वे दास्ता की बेड़ियों में जकड़ी थी शिक्षा का अभाव था कष्ट कठिनाईयों से भरा जीवन जी रही थी। बच्चे ने माँ की यह बात गांठ बाध ली बड़ा होकर प्रोफेसर बना, कुछ धन जीवीका उपार्जन में लगाकर पूरा जीवन नारी उत्थान के कार्य में लगा दिया। सच्चे अर्थों में ईश्वरचंद्र विद्या के सागर थे ~~इन्ही भाव के साथ~~ हमारे बच्चें सदगुणों का विकास हो प्रगति के ~~पथ~~ पथ पर आगे बढ़े। कहने का तात्पर्य है

आइये अब क्रम आगे बढ़ाये ?

1. गणेश पूजन:- इसमें गणेश जी का पूजन करते हैं। गणेश जी विवेक के देवता हैं। प्रत्येक शुभ कार्य में सर्व प्रथम गणेश जी का पूजन किया जाता है। विवेक का अर्थ हैं। विद्या, विद्या का विकास होता हैं सद्गुण व सद्भाव शिशु में आये। बच्चे में बराबर विवेक शिलता बना रहें। गणेश जी की प्रतिमा आपने देखी ही होगी अगर बालक को हमें विकास शील बनाना हैं तो उन्ही के अनुरुप बनने की प्रेरण बालक को देनी होगी। गणेश जी की लम्बी सूड़ होती हैं हमारे बच्चे भी समाज में ईमानदार बने और ऐसा काम न करें कि माता-पिता को समाज के सामने लज्जित होना पड़े सूप के समान कान होते हैं सुप का गुण है अच्छाई को धारण करना और बुराईयों को फेक देना यह गुण हमारे बालक में भी आये। गणेश जी का बड़ा पेट होता हैं। इसका अर्थ है गणेश जी ज्यादा लडडू खाते थे इसलिए बड़ा, नही, गणेश जी सबकी अच्छी बुरी बातों को हजम करने कि शक्ति रखती हैं। हमारे बालक भी अच्छे-बुरे बातों को पचा सके।

निर्देश- बच्चे के हाथ में अक्षत-पुष्प दे दें सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है उसे दुहराएँ।

सूत्र ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि।

(बच्चे में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी विकास करेंगे)

क्रियापक्ष- आइये अब मंत्र के साथ पूजा वेदी या खाली तश्तरी पर चढ़ा दें

मंत्र- ॐ विद्यां गणानां त्व गणपति छ्र हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति छ्र हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति छ्र हवामहे, वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।

2. सरस्वती पूजन- माँ सरस्वती को शिक्षा का प्रतीक माना गया हैं। माँ का स्नेह प्यार जिस प्रकार पुत्र के लिए आवश्यक हैं ठीक उसी प्रकार विद्या कि देवी माँ सरस्वती का प्यार दुलार बालक को मिलता रहे। माँ सरस्वती कला और भाव संवेदनाओं की देवी। हमारे बालक में भी अनेक प्रकार की कलाएँ छिपी होती हैं। हमें उसी कला तक पहुँचाने और बालक को उसी ओर बढ़ने का प्रयास करते रहें बालक के अन्दर संवेदनशील बढ़ना चाहिए ताकि उसके अन्दर दुसरों का दुखः देखकर उसे दूर करने की प्रेरणा उसके मन में उठे।

कहानी- जिस प्रकार काली दास महामूर्ख थे लेकिन जब उनका विवाह विद्योत्मा नामक विद्युषी के साथ हुआ तब काली दास विद्योत्मा तक नही कह पा रहे थे। तब विद्योत्मा ने कहा पहले माँ सरस्वती के शरण में जाओं और ज्ञान प्राप्त करके मेरे पास आना फिर काली दास माँ सरस्वती के शरण में गयें। और माँ सरस्वती की कृपा ऐसी बरसी की वे महाकवि काली दास बन गये। आइये माँ सरस्वती की अनुदान वरदान हमारे बच्चे पर बना रहें।

निर्देश- अभिभावक हाथ में अक्षत-पुष्प ले कर सुत्र दुहरायें।

सूत्र- ॐ कलां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि।

(बच्चे में कलात्मकता और संवेदनशीलता का विकास करेंगे)।

क्रिया पक्ष– अब मन्त्र के साथ अक्षत-पुष्प को चढ़ा दे।

मंत्र– ॐ पावका न: सरस्वती, वाजेभिर्वाजिनवती। यज्ञं वष्टु धिया वसु: ।।

3.उपकरण पूजन:– उपकरण पूजन में शिक्षा प्राप्त करने वाले उपकरणो का पूजन किया जाता हैं। प्राचीन समय से ही कल, दवात, पट्टी का पूजन किया जाता था। पर आज हम पेन, कॉपी, किताब का पूजा करेंगें। क्योकि तीनों की अधिष्ठात्री देवी धृति, पुष्टि और तुष्टी हैं।

(कलम) धृति– धृति का अर्थ हैं अभिरूची हम अपने बालक में पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत करेगें। इसके लिए घर में श्रेष्ठ कहानियों की किताब हम अपने बच्चे को सुनायें ताकि बच्चे के मन में रूचि जागृत होगा।

(दवाद) पुष्टि– का अर्थ हैं एकाग्रता, बच्चे में एकाग्रता का विकास करेगें। इधर-उधर भागने वाला डावा डोल मन वाला व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकता इसलिए बालक को बचपन से ही एकाग्रता का महत्व समझाये।

(पट्टी)–तुष्टि का अर्थ है श्रमशील, अर्ध्ययन के लिए श्रम भी उतना ही आवश्यक है जितनी एकाग्रता और अभिरूचि है साधन कितना भी प्रखर क्यों न हो उसका लाभ तभी मिल सकता है जब बालक श्रम करेंगे। हर विद्यार्थी को परिश्रमी होना जरूरी है साथ ही वह अपने शिक्षा प्राप्त करने वाले उपकरणों को व्यवस्थित रखेंगे उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखेंगें कापी किताब

को फाड़ फुड़ नही करेंगे, पेन को मुहँ मे न डालें। अध्ययन के पूर्व-नमन वंदन करें।

क्रिया पक्ष– बालक तथा माता-पिता हाथ में अक्षत-पुष्प ले सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है उसे दुहराये।

सुत्र–ॐ विद्यासंसाधनमहत्वं स्वीकारिष्ये।

(विद्या विकास के साधनों की गरिमा का अनुभव करते रहेगें)।

अब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प कापी पर चढ़ा दे।

मंत्र–ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽइह मादयन्तामोऽ प्रतिष्ठ॥

4.गुरु पूजन– गुरु व्यक्ति नही शक्ति है गुरु जीवन जीने का मार्ग दिखाते है। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े को दूध पिलाती है उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य को विद्या रुपी अमृत पिलाते हैं। माता-पिता को यह चाहिए कि बालक के मन में अपने शिक्षकों एवं गुरुजनों के प्रति आदर का भाव विकसित करें। अपने से बड़ों का आदर करें।

कहानी– एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए गए परन्तु क्षत्रिय न होने के कारण उन्होने एकलव्य को शिक्षा देने से मना कर दिया। फिर एकलव्य ने गुरू द्रोणाचार्य कि मिट्टी की मूर्ति बनायी और उन्हीं को गुरू मानकर उसी के आगे धनुर्विद्या का अभ्यास करते हैं। परिणाम यह रहा है कि वह अर्जुन से भी श्रेष्ठ धनुर्धर बन गये। ठीक उसी प्रकार हमारे बालक भी गुरू के कृपा का पात्र बने।

क्रिया पक्ष– माता-पिता व बच्चे हाथ में अक्षत-पुष्प ले लें तथा सूत्र दुहरायें।

सूत्र- ॐ आचार्यनिष्ठांवर्धयिष्यामि। (शिक्षकों, गुरुजनों के प्रति निष्ठ को सतत बढ़ाते रहेंगे।)

अब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प गुरु के चित्र में चढ़ाएँ।

मंत्र- ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जनशलकया।

चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

3. अक्षर लेखन– आज हम बालक को सर्वप्रथम गायत्री मंत्र लिखाने जा रहे हैं। उसमें आध्यात्मिक गुणों का विकास निरन्तर होता रहे। वह जीवन में श्रेष्ठ बनता हुआ आगे बढ़े। ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है, भू का तात्पर्य मन से भूर्वः संयम से और स्वः का विवेक से है। अर्थात् बालक शिक्षा प्राप्त तो करें लेकिन यह भी याद रखें कि प्राप्त शिक्षा को वह अच्छे कार्यों में नियोजित करें। पढ़ने के पहले यह पंच अक्षरी गायत्री मंत्र इसलिए लिखाये जाते है कि बालक परमात्मा को अपनी मनोभूमि में सबसे ऊपर स्थान दे जब भी पढ़ने बैठे सबसे पहले गायत्री मंत्र का उच्चारण करें। तभी पढ़े।

क्रिया पक्ष– माता-पिता बालक के हाथ में पेन पकड़ा कर पहले सूत्र दोहरायें।

सूत्र- ॐ नीतिनिष्ठां वर्धमिष्यामि।

(बच्चे में नीति के प्रति निष्ठा की वृद्धि करते रहेंगे)।

आइये अब गायत्री मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है बच्चे का हाथ पकड़ कर पंच अक्षरी गायत्री मंत्र लिखायें।

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अब अक्षत पुष्प कार्ड में चढ़ादें

संकल्प–अद्य.....गोत्रोत्पन्नः ..... नामाहं विद्यारम्भसंस्कार सिद्धार्थं देवानां तुष्टयर्थं देवदक्षिणन्तर्गते-विद्यां संवर्धयिष्यामि, कलात्मकतां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि, विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये, आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि, नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि, इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अंह करिष्ये।

जन्मदिन संस्कार

भूमिका-आज जिन परिजनों का जन्मदिन है, उनके लिए यह परम सौभाग्य का दिन है। यही एक ऐसा संस्कार है जिसे हर इन्सान को प्रति वर्ष मनाने का अवसर मिलता है। यों तो व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रेरणादायी प्रसंग पर्व त्यौहार, संस्कार आदि आते और मनाए जाते हैं। पर व्यक्तिगत दृष्टि से मनुष्य का अपना जन्मदिन उसके लिए सबसे बड़े, हर्ष, गौरव एवं सौभाग्य का दिन हो सकता है। भगवान श्रीराम का जन्मदिन राम नवमी, भगवान श्रीकृष्ण का जन्मदिन जन्माष्टमी जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही किसी सामान्य व्यक्ति के जीवन में उसका जन्मदिन किसी भी प्रकार कम आनन्द एवं उल्लास का नहीं होता। यदि उसे गम्भीरता पूर्वक आत्मावलोकन करते हुए नर से नारायण, मानव से महामानव

प्रेरणादायी वातावरण में संस्कार शुभ संकल्प के साथ मनाया जाये तो,

और पुरुष से पुरुषोत्तम बनने क पथ प्रशस्त हो जाए। परम पुज्य गुरुदेव ने कहा है कि मनुष्य जन्म लेना सरल है किन्तु मनुष्यता प्राप्त करना कठिन है सभी प्राणियों में मानव जीवन को श्रेष्ठ माना जाता है। कहाँ भी गया है।

बड़े भाग मनुज तन पावाँ, सुर दुर्लभ सद् ग्रंथ गावाँ।

जो देवताओं को भी दुर्भल है वह मानव जीवन हमें परम पिता परमात्मा से उपहार स्वरुप मिला है।

(ऋषियुग्म के अवतरण से यह धरा धन्य हो गई।) आप सब भी उन्हीं के मानस पुत्र व पुत्रियाँ हैं। गंभीरता पूर्वक विचार करें। अबतक के जीवन का शुभ-अशुभ कर्मों का सूक्ष्मता से अवलोकन करें। मानव जीवन को सार्थक बनाने का निरन्तर (बराबर) प्रयास करते रहना है। आत्म चिन्तन, आत्मसमीक्षा करें। कमजोरियों से जूझना है। उन पर विजय प्राप्त करते हुए आगे कदम बढ़ाते चलना है। हर जन्मदिन यही संदेश लेकर आता है। सोचें, विचारे, अब तक क्या करते रहे है? मानव जीवन की गरिमा का कितना ध्यान रखा गया है। क्या कुछ भूलें हुई हैं? अच्छाईयाँ बढ़ाते चलना है। बुराइयों को दूर करते चलना है। इसी में मानव जीवन की सार्थकता है। कहा भी गया है कि-

आत्म समीक्षा कर इस जीवन से, निज दोषों को दूर भगायें। जन्मदिवस संस्कार मनाकर, मानव जीवन को धन्य बनायें।।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए जन्मदिवस संस्कार यदि मनाया जाय तो निश्चित रूप से आप सबका जीवन धन्य हो जाएगा। व्यक्तिगत जीवन ही नहीं, परिवार, समाज और राष्ट्र वातावरण भी सुखमय बनेगा। अपना सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है। लेकिन हमें सबके हित में अपना हित मानते हुए, आत्म सुधार के साथ-साथ जन कल्याण के लिए भी प्रयासरत रहना है। आईए इसी शुभकामना के साथ कर्मकाण्ड प्रारम्भ करते हैं-

1. पंच तत्व पूजन– गहा गया है कि– ***छिति जल पावक गगन समीरा पंच रचित यह अधम शरीरा।*** हमारा शरीर-पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश, इन पाँच तत्वों के सहयोग से बना है। इनके पूजन का भाव है-इनके प्रति कृतज्ञता या सम्मान का भाव रखना। ***दूसरा*** कि हम इनका सदुपयोग ही करेंगे, जल, वायु, पृथ्वी इत्यादि को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए भी अपनी शक्ति सामर्थ्य का इस्तेमाल करेंगे। गंदा या बरबाद न होने देंगे। ***तीसरा*** संदेश यह है कि पंच तत्वों का बना शरीर नश्वर है। शरीर स्वास्थ्य का ध्यान तो रखें। किन्तु केवल शरीर तक ही सीमित न रह जाएँ। शरीर में जो जीवात्मा है-उसके कल्याण की बात भी सोचें। इसी प्रेरणा के साथ हाथ में अक्षत-पुष्प ले कर सूत्र दुहराएँ- ***ॐ श्रेयसां पथे चरिष्यामि।*** (जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलायेंगे) पाँचों तत्वों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए-श्रद्धा पूर्वक भाव सूत्र दुहराएँ।

1. पृथ्वी माता हमें उर्वरता और सहनशीलता दें।

2.(जल)वरुण देवता हमें शीतलता और सरसता दें।

3. वायुदेवता हमें गतिशीलता और जीवनीशक्ति प्रदान करें।

4. अग्नि देवता हमें तेजस् और वर्चस् प्रदान करें।

5. आकाश देवता हमें उदात्त और महान् बनायें।

अब मंत्र के साथ अक्षत पुष्प सामने पात्र में समर्पित कर दें। मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है।

मंत्र :- ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं,

यज्ञꣳ समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तातमोऽम्प्रतिष्ठि।

दीप पूजन– दीपक को ज्ञान, चेतना, प्रकाश का प्रतीक माना जाता है। एक छोटा सा टिमटिमाता हुआ दीपक भी घनघोर अंधेरे को चुनौती देता रहता है। अपने सामने उसे आने नहीं देता है। हम भी दीपक जैसा बनें। अज्ञान रूपी अन्धेरा अपने जीवन से भी मिटाना है और समाज से भी। ज्ञान का प्रकाश अन्दर-बाहर चारों तरफ फैलाते रहें। इसी पवित्र भाव से यह क्रिया करें। हाथ में अक्षत-पुष्प लें सूत्र दुहराएँ-

सूत्र– ॐ परमार्थमेव स्वार्थं मनिष्ये। (परमार्थ को ही स्वार्थ मोनंगे।)

पाश्चात्य संस्कृति में दीपक बुझाकर जन्मदिन मानाया जाता था, पर वर्तमान में दीप जलाकर जन्मदिन मनाते है। अब स्थापना ***तमसो माँ ज्योर्ति गमय*** का भाव रखते हुए दीप प्रज्जवलित करें।

ॐ भूर्भव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्।

मंत्र–: अब हाथ जोड़कर दीपक से प्रेरणा ग्रहण करते हुए भाव सूत्र दुहराएँ।

1. दीपक की तरह हमें अखण्ड पात्रता प्राप्त हो।

2. हमें अक्षय स्नेह की प्राप्ति हो।

3. हमारी निष्ठा ऊर्ध्वमुखी हो।

3. ज्योति वंदन–आप लोग देखे ही होगें, प्रत्येक मांगलिक (शुभ) कार्य में दीप जला कर पूजन किया जाता है। ज्योति को

ज्ञान का प्रतिक माना गया है, जिस प्रकार ज्योति की लव हमेशा ऊपर की ओर उठती है। ठीक उसी प्रकार आप भी प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ते रहे और श्रेष्ठ कार्य करते हुए आगे बढ़े।

वन्दनीया माता जी गीत गाया करती थी-तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, ये संसार तेरा बनाया हुआ है। अर्थात् अखिल विश्व में जो कुछ भी हम देखते, सुनते या अनुभव करते हैं सब चेतना स्वरुप, प्रकाश, अग्नि, ज्योति स्वरुप परमसत्ता की ही रूप है। जड़-चेतन सब में वही हैं, हम सब के अन्दर भी वही हैं। यह बराबर बोध बना रहे। अप्प दीपों भव का भाव प्रेरणा ग्रहण करते हुए ज्योति की वन्दना करें। हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर भाव सूत्र दुहराएँ-

1. अग्नि ही ज्योति है, ज्योति ही अग्नि है।

2. सूर्य ही ज्योति है, ज्योति ही सूर्य है।

3. अग्नि ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है।

4. सूर्य ही वर्चस् है, ज्योति ही वर्चस् है।

5. ज्योति ही सूर्य है, सूर्य ही ज्योति है।

अब मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है। आप सब मंत्र के साथ अक्षत-पुष्प पात्र में अर्पित करें।

मंत्र:- ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योति: सूर्य: स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा। सूर्योवर्चो ज्यातिर्वर्च: स्वाहा। ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा।

4.व्रत धारण- व्रतों के बंधन में बधा हुआ मनुष्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। इसके साथ अपने जीवन को ऊँचा उठाने-अच्छा बनाने का एक व्रत लिया जाता है। कोई एक बुराई छोड़ने का तथा कोई एक और अच्छाई अपनाने का व्रत लें (उम्र के अनुसार जो बड़े है) अपने अन्दर झाँके, कौन सी बुराई है जो हमारी सुख-शान्ति, और प्रगति में बाधक है, उसे छोड़ने का साहस करें। नौजवान भाई गलत संगत से बचें। नशा पान न करें महा पुरुषों का अनुगमन करें। छोटे बच्चें बच्चियाँ भी गलत खान-पान, गलत संगत से बचें। गाली ग्लोज न करें। अच्छे किताब पढ़े। सभी परिजन साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा का व्रत पालन करें। व्यस्त रहें, मस्त रहें। सादाजीवन उच्च विचार बनाएँ। अपने प्रति कठोर रहें, दूसरों के प्रति उदारता वरतें। महानता का वरण करें।

अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराएँ-

ॐ महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि।

(हम महत्त्वकांक्षाओं को संयमित रखंगे।)

गुरुदेव माता जी सभी देवी-देवताओं अग्नि, वायु सूर्य, चन्द्र आदि को साक्षि मानकर अपने व्रत की घोषणा करें। संकल्प की सफलता के लिए देव शक्तियों को नमः शब्द के साथ शीश झुकाकर दोनों हाथ जोड़कर नमन करते चलें।

1.ॐ अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि। ॐ अग्नये नम:।

2.ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ वायवे नम:।

3. ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ सूर्याय नमः।

4. ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ चन्द्राय नमः।

5. ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। ॐ इन्द्राय नमः।

संकल्प शक्ति की उपलब्धि, कभी न अधूरी रहती,

चाहे कितना दूर लक्ष्य हो, सहज सफलता मिलती है।

किसी भी कार्य की पूर्णता के लिए संकल्प की आवश्यकता होती है।

5. संकल्प पूर्णहुति– आत्मीय परिजनों अब तक जो कुछ भी कहा गया आपने उसे ध्यान पूर्वक सुना। उसकी सफलता इसी में है कि उसे पूरा करने का आश्वासन आप देव शक्तियों को दें। ऋषियों की पावन परम्परा को जीवन्त बनाए रखना है। त्याग बलिदान, व तप तितिक्षा भरा जीवन, जीना है। (यहाँ से सद्साहित्य खरीदकर अवश्य ले जाएँ) पत्रिकाओं को भी मँगाएँ। नित्य स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करें। गुण, कर्म और स्वभाव को मानव, देवमानव, ऋषियों जैसा बनाने का संकल्प लें। प्रति दिन एक रुपया अनुदान के रुप में निकाले हाथ में अक्षत पुष्प और जल ले लें। संकल्प का सूत्र दुहराएँ:-

6. आशीर्वचन– समीप में बैठे सभी परिजन हाथ में अक्षत-पुष्प लें। जिनका जन्म दिन है वे हाथ जोड़ें, आँखें बन्दकर बैठे रहें। उपस्थित परिजन मंत्र के साथ उनको आशीर्वाद दें। उज्जवल भविष्य की कामना करें। पूज्य गुरुदेव, वन्दनीया माता जी, गायत्रीमाता, यज्ञ भगवान का आाशीर्वाद इन पर सदैव

बरसता रहे। वे आत्म परिष्कार के साथ-साथ नव सृजन के काम में सतत् संलग्न रहें-परम सत्ता उन्हें ऐसी शक्ति दें। इसी भाव से उनपर पुष्प वर्षा करें।

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मङ्गं पुण्सडरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः॥

संकल्प

अद्य....गोत्रोत्पन्नः .....नामाहं जन्मदिवसोत्सव संस्कार सिद्धयर्थं देवानां तुष्ट्यर्थं देव दक्षिणान्तर्गते-श्रेयसां पथे चरिष्यामि, परमार्थमेव स्वार्थ मनिष्ये, महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि-इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

विवाह दिवसोत्सव

भूमिका- विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है। दोनों प्राणी अपनी अलग-अलग अस्तित्व को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते है। इसी से समग्र व्यक्तितत्व का निर्माण होता है दाम्पात्य जीवन में पति और पत्नि दोनों को आपस में एक दूसरे के प्रति समर्पण विश्वास की भावना रखनी चाहिए। तभी दाम्पात्य जीवन सफल हो सकता है। एकाकी मनुष्य अपूर्ण है। पति पत्नि दोनों के संबंध से एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण होता है स्त्री और पुरुष की अपनी-अपनी कुछ ऐसी विशेषतायें हैं। जो दूसरे में नही। इन दोनों के समन्वय से वे अभाव दूर होते है। जिनके कारण मानसिक शान्ति और सांसारिक सुख सुविधाओं का द्वार रुका पड़ा रहता है।

दो आँख, दो कान, दो हाथ, दो पैर की तरह मनुष्य भी

गाड़ी के दो पहियों की तरह मानव जीवन पति पत्नि के दो आधारो पर चलता है। दो अंगो में विभक्त है। दोनो से मिलकर शरीर शोभा पाता है। अन्यथा एकाकी पन काने लँगड़े लूले व्यक्ति की तरह कुरुप बनकर रहा जाता है।

बन्दूक एवं मोटर गाड़ी की लाइसेन्स हर साल नवीनीकरण कराना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार विवाह के कर्तव्यों को ठीक तरह पालन करने के लिए और भूल चुक को सुधारने के लिए विवाह लाइसेन्स का यदि हर वर्ष नवीनीकरण कराया जाय तो इसमें कुछ हानि नही होगी। हर दृष्टि से लाभ ही लाभ ही होता हुआ चला जायेगा। जब पति-पत्नि आपस में

घुलमिल कर रहते है, तो घर स्वर्ग नजर आता है। चारों ओर आनंद ही आनंद संव्याप्त होता है, परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विषम क्यों न हो। हर परिस्थिति में दोनों को आपस में ताल-मेल बिठाना चाहिए तभी दाम्पत्य जीवन सार्थक होगा।

कहानी- मेरी और टॉमस का दांमपत्य जीवन अंनत प्रेम से भरा पूरा था। हर वर्ष विवाह दिवस मनाते और छोटा-मोटा उपहार उस दिन एक-दूसरे को भेट करते है। गरीबी में भी आनंद पूर्ण जीवन बिता रहे थे। उस वर्ष विवाह का दिन फिर आया। दोनों एक दूसरे के लिए उपहार देने की योजना बनाने लगे, पर जेबे बिल्कुल खाली थीं। टॉमस ने पत्नि के सुनहरे बालों में लगाने के लिए एक सुनहरी क्लिप खरीदने की बात सोची। मेरी सोचने लगी कि पति की हाथ घड़ी के लिए सुनहरी चेन खरीदी जाय। दोनों के मन में थे। साधन जुट नही रहा था। दिन निकट आ गया। टॉमस पुरानी घड़ी बेचकर बदले में सुनहरी क्लिप खरीद लाया। मन में बुहुत प्रसन्नता थी। मेरी क्या करती? वह धुँधराले बाल काटकर मिले पैसों से घड़ी की चेन खरीद लाई सिर पर टोपा लगा लिया।

विवाह दिन आया, उपहार देने के लिए एक ने दूसरे की हाथ बढ़ाया। क्लिप कहाँ लगे बाल नदारद। चेन कहाँ बाँधे, घड़ी गायब। पूछने पर भेद खुला शोभित न होने पर भी, इन उपहारों ने एक दूसरे का दिल सदा-सदा के लिए जीत लिया। दोनो की आँखों में प्रेम के आँसू थे ऐसी होती है। ***आत्मीयता***- गरीब हो कर भी प्रेम, सहकार से भरा पूरा ***दाम्पत्य जीवन***-हम समझ नही

पाते दाम्पत्य जीवन कैसे होना चाहिए। दाम्पत्य जीवन में दोनों के प्रति आत्मीयता, प्रेम सहकार से होना चाहिए। आप लोगो का दाम्पत्य जीवन भी ऐसा ही हो।

(आज तो धन होकर भी लोग नारकीय जीवन जी रहे है।) आइये अब यहाँ से ग्रन्थिबन्धन की ओर बड़ते है।

1. ग्रन्थिबन्धन– पाणि ग्रहण के बाद समाज द्वारा दोनों को एक गाँठ में बाँध दिया जाता है। दुपट्टे का छोर बाँधने का अर्थ है। दानों के शरीर और मन से एक नई सत्ता का उदय होना। अर्थात् दोनों एक दूसरे से बंधे रहे। जिस प्रकार दुध और पानी आपस में मिल जाते है उसी प्रकार दो शरीर और एक प्राण होकर रहना चाहिये। इसमें पुष्प अक्षत, दुर्वा, हल्दी की गांठ और पैसा बाँधी जाती है।

पुष्प– पुष्प के समान सदा प्रफ्फुलित एवं सुगन्धित रहे।

अक्षत– अक्षत अटूट निष्ठ का प्रतीक है। एक दूसरे के प्रति अटूट निष्ठा बने रहे।

दुर्वा– हल्दी आरोग्य का प्रतिक है। मंगल कारी होती है।

पैसा– घर में संतुलन बनाना किसी एक का पैसे पर एकाधिकार न होकर दोनो का समान अधिकार होना। फिजुल खर्च नही करना।

क्रिया पक्ष– पति पत्नि हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

सूत्र– ॐ द्विशरीरं एक प्राणं भविष्यामि।

दुर्वा - यह प्रत्येक मौसम में हरा भरा रहता है। उसी प्रकार से हमारा जीवन भी प्रत्येक वर्ष हर परिस्थितियों में हराभरा रहे।

(हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे।)

इसके बाद इन पाँच वस्तुओं को पति-पत्नि के दुपट्टे में कोई बुजुर्ग महिला अथवा पुरुष ग्रन्थि बन्धन करें। सभी लोग ***गायत्री मंत्र बाले।***

पाणिग्रहण– पाणि-अर्थात् हाथ, ग्रहण-अर्थात् स्वीकार करना है। दोनो एक दूसरे से हाथ मिलाना। दोनो मित्र के समान रहेंगे। साथ जीयेगें साथ मरेगें एक दूसरे को सम्मान देगें।

क्रिया पक्ष- दोनों अपने हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

सूत्र– ॐ परस्परं स भावयिष्यामि।

(एक दूसरे को सम्मान देंगे और सुयोग्य बनायेंगे।) आइये दोनो मित्र की तरह मंत्र के साथ हाथ मिलायें

मंत्र– ॐ मंगलम् भगवान् विष्णु:, मंगलम् गरूडध्वज:।
मंगलम् पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरि: ॥

प्रतिज्ञा– अपनी पिछले बुराइयों को छोड़ने और नयी दामपत्य जीवन जीने के लिए संकल्पित होते हुए यह प्रतिज्ञा पत्र पढ़े।

सप्तपदी– इसमें चावल या पुष्प की सात लाइन बनी है। सात बार दोनों कदम से कदम मिलाकर फौजी सैनिकों की तरह आगे बढेगें।

क्रिया पक्ष– इस के पहले हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें।

सूत्र–ॐ कुटुंबं आदर्श विधास्यामि

(परिवार के वातावरण को आदर्शमय बनायेगे।)

अब यहाँ से हाथ जोड़कर खड़े हो जाए मंत्र के साथ चावलों की ढेरियों पर क्रमशः दोनों एक साथ कदम बढ़ायें।

1 प्रथम कदम– (दायाँ) अन्न वृद्धि के लिए घर परिवार के सभी लोगों को ध्यान में रखते हुये सुसंस्कारी अन्न की व्यवस्था करेंगे। ***ॐ परमात्मने नमः।*** परमात्मने नमः

2 दुसरा कदम– (बायाँ) बलवृद्धि के लिए रोज शारीरिक परिश्रम उपासना साधना स्वाध्याय का क्रम बनायेगें। कमजोर नही सशक्त बनकर रहेगें। एक दूसरे को सशक्त बनायेंगे। ***ॐ जीवब्रह्माभ्यां नमः।***

3 तीसरा कदम– (दायाँ) धन वृद्धि के लिए धन के उत्पादन के साथ उसके सदुपयोग की व्यवस्था बनायेंगे। फिजुल खर्च नही करेंगे। ***ॐ त्रिगुणेभ्यो नमः।***

4 चौथा कदम– (बायाँ) सुख वृद्धि के लिए घर में मनोरंजन का वातावरण बनायेंगे, जिसमे परिवार को सुख प्राप्त हो। ***ॐ चतुर्वेदेभ्यो नमः।***

5 पाँचवा कदम– (दायाँ) प्रजापालन के लिए छोटे बड़े सभी के साथ अच्छे व्यहार रखेगें। ***ॐ पंचप्राणेभ्यो नमः।***

6 छठवाँ कदम– (बायाँ) ऋतु अनुसार व्यहार के लिए दोनों एक दूसरे के मुड देखकर ही व्यहार करेंगे। अगर एक गुस्से में है तो दूसरे शांत होकर रहें। ***ॐ षडश्सेभ्यो नमः।***

7 सातवाँ कदम– (दायाँ) मित्रता वृद्धि के लिए दोनों में कोई

भूल कर रहा है। तो एक का कर्तव्य बनता है कि वह उसको आपस में प्यार से समझाये, ताकि वह अपनी भूल समझे, और उसे सुधारने का प्रयास करें। किसी के भी सामने एक दूसरे का अपमान न करें। ***ॐ सप्तऋषि यो नमः।*** सप्त ऋषिभ्यो नमः

आश्वात्सना– पति पत्नि एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर आश्वासन देते है और प्रतिज्ञा करते है कि वे आजीवन एक दूसरे के प्रति ईमानदारी, निष्ठावान रहेगें। एक दूसरे पर अधिकार करने की अपेक्षा अपनी कर्तव्यों का ध्यान रखेगें, प्यार सहकार से अपनी जीवन रूपी गाड़ी को निर्विघ्न चलाते रहेगें।

क्रिया पक्ष– पति पत्नि दोनों एक दूसरे के कंधों पर दहिना हाथ रखें। सूत्र यहाँ से बोला जा रहा है। दुहरायें।
सूत्र– ॐ अधिकारापेक्षाया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये।
(कर्त्तव्यों को महत्व देगें-अधिकारों का उपेक्षा करेगें।)

तिलक– तिलक श्रेष्ठ को किया जाता है। (माँग भरना अर्थात-माँग पूरी करना लड़का माँग भरता है न कि लड़की। इसका एक ही उद्देश्य है कि पत्नि आज से जो माँग करेगी हम उसके पूर्ति करेंगें लेकिन यह उल्टा होता है लड़का ही माँग करने लगता है, गाड़ी चाहिए, तो टीवी तो पैसा। नही तिलक गौरव पूर्ण ढंग से लगाना चाहिए।)

क्रिया पक्ष– पति पत्नि एक दुसरे के माथे पर तिलक लगायें। भावना करें एक दुसरे के सम्मान और गौरव के कारण बनेंगे।

मंत्र यहाँ से बोला जा रहा है। *ॐ स्वस्ति न* इन्द्रो वृद्धाश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदः। *स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥*

संकल्प– आज आपने विवाह दिवस के शुभ अवसर पर परम पूज्य गुरूदेव वन्दनीया माता जी के सूक्ष्म उपस्थिति में अपने परिवार को आदर्श बनाने का, एक बनकर रहने का और कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए जीवन भर दोषों से बचे रहने का संकल्प ले रहे है, भगवान उन सभी संकल्पों को पूरा करें ऐसा भाव करते हुए हाथ में पुष्प ले लें। हमारे साथ संकल्प सुत्र दुहरायें।

आशीर्वचन– अब सभी परिजन एवं प्रति निधि बहिनें हाथ में अक्षत-पुष्प लें। जिनका विवाह दिन है वे हाथ जोड़े, आखें बन्द करके बैठे रहें। उपस्थित परिजन मंत्र के साथ उनको आशीर्वाद दें। उज्जवल भविष्य की कामना करें। पूज्य गुरूदेव, वन्दनीया माता जी का आशीर्वाद इन पर सदैव बरसता रहे वे आत्म परिष्कार के साथ-साथ नव सृजन के काम में सतत् संलग्न रहे-परम सत्ता उन्हें ऐसी शक्ति दें। इसी भाव से उन पर पुष्प वर्षा करें।

मंत्र– ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः, मंगलम् गरूडध्वजः।

मंगलम् पुण्डरीकाक्षो, मंगलायतनो हरिः ॥

संकल्प

अद्य .....गोत्रोत्पन्नः.....नामाहं विवाह-दिवसोत्सव संस्कार सिद्धायर्थं देवानां देवूदक्षिणान्तर्गते-द्विशरीरं एकप्राणं

भविष्यामि, परस्परं सम्भावयिष्यामि, कुटम्बं आदर्शं विधास्यामि, अधिकारापेक्षया कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये इत्येषां व्रतानां धारणार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।